NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

सतत विकास

(Sustainable Development)

B.P.A.G.-174

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

सतत विकास

(Sustainable Development)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No. *Chapterwise Reference Book* *Page*

सतत विकास की अवधारणा
(Concept of Sustainable Development)

1. सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र 1
(Meaning, Nature and Scope of Sustainable Development)

2. सतत विकास के प्रमुख घटक 9
(Major Components of Sustainable Development)

3. सतत विकास के दृष्टिकोण 20
(Approaches to Sustainable Development)

4. सतत विकास के लक्ष्य 31
(Goals of Sustainable Development)

विकास, सततता और जलवायु परिवर्तन
(Development, Sustainability and Climate Change)

5. वैश्विक सामूहिक धरोहर और जलवायु परिवर्तन की अवधारणाएँ 42
(Concept of Global Commons and Climate Change)

6. सतत विकास पर अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन 52
(International Conventions on Sustainable Development)

7. विकास, सततता और जलवायु परिवर्तन के बीच 63
परस्पर संबंध : विभेदित जिम्मेदारियों का केस
(Interrelationship Among Development, Sustainability and Climate Change: Case for Differentiated Responsibilities)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

स्वास्थ्य शिक्षा और खाद्य सुरक्षा
(Health, Education and Food Security)

8. सतत विकास एवं खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध 73
(Relationship Between Sustainable Development and Food Security)

9. स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में हरित और अभिसरण प्रौद्योगिकियों की भूमिका 83
(Role of Green and Converging Technologies in Health Sanitation and Food Security)

10. सतत विकास में शिक्षा की भूमिका 92
(Role of Education in Sustainable Development)

सतत विकास : भविष्य पथ
(Sustainable Development: A Way Forward)

11. सतत विकास में नवाचारी नीतियों की भूमिका 103
(Role of Policy Innovations in Sustainable Development)

12. निष्पक्षता और न्याय की पारिस्थितिक सीमाओं की पहचान 112
(Recognition of Ecological Limits of Equity and Justice)

13. संसाधन उत्पत्ति एवं क्षमता वृद्धि के वैकल्पिक तरीके 123
(Alternative Ways of Resource Generation and Capacity Enhancement)

14. सतत विकास में गैर-राज्य हितधारकों की भूमिका 132
(Role of Non-State Stakeholders in Sustainable Development)

■■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

सतत विकास

(Sustainable Development)

B.P.A.G.-174

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। हर भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. सतत् विकास के आर्थिक आयामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'सतत विकास के आर्थिक घटक'

प्रश्न 2. पृथ्वी शिखर सम्मेलन, 1992 पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-55, प्रश्न-4

प्रश्न 3. विकास और सततता की अवधारणाओं की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-64, प्रश्न-1

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) मानव जाति की सामूहिक धरोहर

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-46, 'मानव जाति की साझी विरासत'

(ख) सामूहिक धरोहर की त्रासदी

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-45, 'सामूहिक धरोहर की त्रासदी'

भाग-II

प्रश्न 5. जलवायु परिवर्तन की अवधारणा का वर्णन कीजिए और विकास, सततता तथा जलवायु परिवर्तन के बीच संबंधों को उजागर कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-66, प्रश्न-2, पृष्ठ-68, प्रश्न-4

प्रश्न 6. सतत् विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंधों की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-78, प्रश्न 4

प्रश्न 7. ''सतत् विकास में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।'' विस्तारपूर्वक समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-99, प्रश्न 7

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सतत् विकल्प की प्रासंगिकता

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-123, 'सतत चयन की प्रासंगिकता'

(ख) सतत् विकास की विश्वविद्यालयों की भूमिका

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-135, प्रश्न 4

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

सतत विकास

(Sustainable Development)

B.P.A.G.-174

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। हर भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. सतत् विकास के एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण और औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-23, प्रश्न-5 तथा प्रश्न-4

प्रश्न 2. सतत् विकास के सामाजिक घटकों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-11, प्रश्न-2

प्रश्न 3. वैश्विक सामूहिक धरोहर और वैश्विक शासन तथा जलवायु परिवर्तन के बीच संबंध की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-42, 'वैश्विक सामूहिक धरोहर', पृष्ठ-43, 'जलवायु परिवर्तन का वैश्विक शासन'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) खाद्य सुरक्षा की अवधारणा

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-73, 'खाद्य सुरक्षा का अर्थ एवं अवधारणा'

(ख) यथास्थिति दृष्टिकोण

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-22, प्रश्न 2

भाग-II

प्रश्न 5. जलवायु परिवर्तन के अर्थ और प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-66, प्रश्न-2

प्रश्न 6. सतत् विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-78, प्रश्न-4

प्रश्न 7. स्वास्थ्य और स्वच्छता में हरित प्रौद्योगिकी की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-85, प्रश्न-3

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) पर्यावरणीय संरक्षण के लिए मूल निवासियों का महत्त्व

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-119, प्रश्न 8

(ख) सतत् विकास की आवश्यकता

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-133, प्रश्न 1

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

सतत विकास
(Sustainable Development)

सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र
(Meaning, Nature and Scope of Sustainable Development)

1

परिचय

वर्तमान समय में सतत विकास की अवधारणा पर्यावरण का सबसे चर्चित मुद्दा है। सतत विकास वह प्रक्रिया है, जिसमें पृथ्वी की क्षमताओं पर विचार करके विकास की चर्चा की जाती है। सतत विकास के अंतर्गत ऊर्जा उपयोग पर ध्यान दिया गया, क्योंकि विश्व स्तर पर औद्योगिक प्रगति के कारण इसके अतिरिक्त उपयोग से पर्यावरण को क्षति हो रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने जून, 1992 में ब्राजील के रियो डी जनेरियो में सम्मेलन किया, जिसे 'पृथ्वी सम्मेलन' कहा जाता है। इसमें सतत विकास एक प्रमुख विषय था। सतत विकास को जनसंख्या वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, ओजोन रिक्तीकरण जैसी वैश्विक समस्याओं के अतिरिक्त दबाव के बीच प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। सतत विकास के लिए यह आवश्यक है कि प्रकृति के साथ बेहतर सामंजस्य स्थापित हो।

अध्याय का विहंगावलोकन

सतत विकास का अर्थ

सतत विकास की अवधारणा ब्रंटलैंड आयोग की देन है। इस आयोग द्वारा 'हमारा सामूहिक भविष्य' नामक रिपोर्ट में इस शब्द का जिक्र किया गया था। विकास को परिभाषित करते हुए इसमें कहा गया कि "भविष्य की पीढ़ियों की कुशलताओं से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना आवश्यक है।" इस तरह से यह मानव की पीढ़ियों के भीतर न्यायसंगतता और अंतरपीढ़ीगत न्यायसंगतता की अनिवार्यता को भी पूरा करने का प्रयास करता है। पर्यावरण एवं विकास के विश्व आयोग ने सतत विकास को परिभाषित करते हुए कहा कि "सतत विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जिसमें संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास की पारिस्थितिकी तथा संस्थागत परिवर्तन आदि कारकों में तालमेल होता है तथा मनुष्य की वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति को संदर्भित करता है।"

विश्व के नेता अब यह समझ रहे हैं कि सामाजिक-आर्थिक विकास सतत होने चाहिए, जो न केवल वर्तमान जरूरतों को, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को भी पूरा करने में सक्षम हो।

सतत विकास का स्वरूप

जब हम आगामी पीढ़ियों के बारे में सोचते हैं कि उत्तराधिकार के रूप में उनके लिए क्या छोड़ें, तो हमें भौतिक और मानव पूँजी की पूरी श्रृंखला और प्राकृतिक संसाधनों के बारे में सोचना होगा, जो उनके कल्याण का निर्धारण करेगी।

सतत विकास के सिद्धांत को अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी सोच में परिवर्तन लाएं। सतत विकास की आर्थिक एवं पर्यावरणीय दोनों प्रणालियों के लिए स्थानीय सीमा स्तरों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग का कथन है कि "सतत विकास के लिए यह आवश्यक है कि वायु, जल और अन्य प्राकृतिक तत्वों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव कम-से-कम पड़े, ताकि पारिस्थितिकी तंत्र की समग्र अखंडता को बनाए रखा जा सके।"

पर्यावरणीय पहलू से सततता के निम्नलिखित लक्ष्य हो सकते हैं–

- जैवमंडल के कार्य के लिए आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखना,
- जैविक विविधता को बनाए रखना,
- पर्यावरण प्रदूषण को रोकना,
- पर्यावरण संरक्षण मानकों की स्थापना तथा
- प्रमुख कानूनों, परियोजनाओं, प्रौद्योगिकियों को सुनिश्चित करने के लिए पूर्ण मूल्यांकन प्रारंभ करना।

सतत विकास का क्षेत्र

सतत विकास का क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और संस्थागत आयामों से संबंधित है।

- **सामाजिक आयाम**–सतत विकास के सामाजिक आयामों में भूख की समाप्ति, अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जेंडर समानता आदि को सम्मिलित करते हुए एक न्यायपूर्ण समाज को स्थापित करना शामिल है।

www.neerajbooks.com

- **आर्थिक आयाम**–सतत विकास के आर्थिक आयाम में समावेशी टिकाऊ आर्थिक विकास, उद्योग नवाचार और बुनियादी ढाँचे का विकास, जिम्मेदारी के साथ उपभोग एवं उत्पादन, गरीबी की समाप्ति आदि शामिल हैं।
- **पर्यावरणीय आयाम**–सतत विकास के पर्यावरणीय आयामों में पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए स्वच्छ जल एवं स्वच्छता, पानी के नीचे का जीवन, जमीन पर जीवन, सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा, जलवायु कार्यवाही आदि शामिल हैं।
- **संस्थागत आयाम**–इसमें सतत विकास लक्ष्यों के लिए भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग शामिल हैं। इन सभी को 17 सतत विकास लक्ष्यों में शामिल किया गया है। सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और नागरिकों की साझेदारी आवश्यक है, ताकि हम भावी पीढ़ी के लिए बेहतर ग्रह छोड़ सकें।

संयुक्त राष्ट्र की नई कार्यावली में यह कहा गया है कि सबसे कमजोर को सशक्त होना चाहिए। इनमें बच्चे, युवा, विकलांग एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोग, वृद्ध व्यक्ति, मूलवासी, शरणार्थी, आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्ति और प्रवासी आदि के लिए समायोजन होना चाहिए।

सतत विकास के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत और विशेषताएँ

सतत विकास के सिद्धांतों में निम्नलिखित सिद्धांत महत्त्वपूर्ण हैं–

- पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण,
- समाज का सतत विकास,
- जैव विविधता का संरक्षण,
- जनसंख्या नियंत्रण,
- मानव संसाधन का संरक्षण,
- नागरिकों की भागीदारी की प्रोत्साहित करना तथा
- अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देना।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. सतत विकास शब्द का वर्णन कीजिए।

उत्तर–सतत विकास शब्द की उत्पत्ति 'हमारा सामूहिक भविष्य' (Our Common Future) नामक एक रिपोर्ट में हुई थी, जिसे ब्रंटलैंड आयोग द्वारा जारी किया गया था। सतत विकास को इसमें एक ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया गया है, जो भविष्य की पीढ़ियों की योग्यता से समझौते किए बिना अपनी वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

सतत विकास की अवधारणा पारंपरिक दृष्टिकोण को अस्वीकार करती है, जिसमें आर्थिक विकास को ही मानव विकास का सूचकांक माना गया। इस सोच के कारण विकसित देशों ने तीव्र आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन किया, साथ ही विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों का भी दोहन हुआ। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से पर्यावरण प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ।

पर्यावरण हानि को देखते हुए सतत विकास, विकास योजनाओं और संसाधन प्रबंधन में एक पसंदीदा शब्द बन गया है। सतत विकास का विचार पर्यावरण संरक्षण से अधिक दूर जाता है। पर्यावरण एवं विकास के विश्व आयोग ने सतत विकास को इस प्रकार परिभाषित किया है "सतत विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जिसने संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास की पारिस्थितिकी तथा संस्थागत परिवर्तन आदि संगठनों में तालमेल होता है तथा मनुष्य की वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति को संदर्भित करता है।"

सतत विकास अर्थव्यवस्था में गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तन को ध्यान में रखता है। यह एक ऐसी वैश्विक अर्थव्यवस्था विकसित करना चाहता है, जो पर्यावरण के अनुकूल हो तथा संयमित हो।

सतत विकास पर्यावरण क्षय और उसके वैश्विक प्रभावों के विश्लेषण पर केंद्रित है। आज समूचा विश्व पर्यावरण असंतुलन की वजह से उपजी समस्याओं से जूझ रहा है। बाढ़, अम्लीय वर्षा, मिट्टी अपरदन एवं मरुस्थलीकरण, भूस्खलन, ओजोन रिक्तीकरण, समुद्री प्रदूषण आदि अनेक समस्याएँ हैं, जिसका कारण मानव जनित है और विकसित देशों का इसमें विशेष योगदान है। सतत विकास समानता, न्याय, शांति जैसे प्रश्नों को समाहित करते हुए सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय तीनों स्तंभों के एकीकरण को बढ़ावा देता है। सतत विकास ही वह विकास है, जिसमें हमारी भावी पीढ़ी का हित संरक्षित है। अत: सतत विकास के वर्तमान प्रयास जारी रहने चाहिए।

प्रश्न 2. सतत विकास का स्वरूप क्या है?

उत्तर–सतत विकास के सिद्धांत को अपनाने के लिए हमें अपनी सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। सतत विकास भावी पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में कोई विशेष वस्तु छोड़ना नहीं, बल्कि उन्हें वह प्रदान करना चाहता है, जिससे वे कम-से-कम रहन-सहन का स्तर प्राप्त कर सकें, जो कि आज हमारा है। इसके लिए हमें भौतिक और मानव पूँजी की पूरी श्रृंखला और प्राकृतिक संसाधनों के बारे में सोचना चाहिए, जो उनके कल्याण का निर्धारण करेगी।

सतत विकास के लिए यह आवश्यक है कि पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाली मानवीय गतिविधियों को सीमित कर सुरक्षित न्यूनतम मानकों के उपयोग पर बल दिया जाए। आर्थिक एवं पर्यावरणीय दोनों प्रणालियों के लिए स्थानीय सीमा स्तरों पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। बढ़ती जनसंख्या की वजह से भूमि दबाव की समस्या से निपटने के लिए जनसंख्या वृद्धि की जाँच और नियंत्रण करने की आवश्यकता है। पशुधन की जनसंख्या

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

को बनाए रखना एवं भूमि हस्तांतरण पर भी नियंत्रण आवश्यक है। विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग का मानना है कि सतत विकास के लिए आवश्यक है कि वायु, जल एवं अन्य प्राकृतिक तत्वों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव कम-से-कम पड़े, ताकि पारिस्थितिकी तंत्र की समग्र अखंडता को बनाए रखा जा सके। सततता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि सतत विकास की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित लक्ष्य हों—

- जैविक विविधता को बनाए रखना,
- पर्यावरण प्रदूषण को कम करना एवं रोकना,
- पर्यावरण संरक्षण मानकों की स्थापना करना,
- सतत विकास में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों को अपनाना,
- कानून, नीतियों, परियोजनाओं और प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन तथा
- जैवमंडल के लिए आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने पर ध्यान देना।

प्रश्न 3. सतत विकास के क्षेत्र की जाँच कीजिए?

उत्तर—सतत विकास आने वाली पीढ़ी के लिए उत्तराधिकार के रूप में आज से कम उपलब्धता नहीं चाहता है। इसके लिए विस्तृत क्षेत्रों को इसके दायरे में लाया जा रहा है, जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना समाज व अर्थव्यवस्था का विकास हो।

सतत विकास के निम्नलिखित क्षेत्र हैं—

- **सामाजिक आयाम**—एक स्वस्थ एवं न्यायपूर्ण समाज सुनिश्चित करने के लिए सतत विकास के सामाजिक आयामों में भूख की समाप्ति, अच्छा स्वास्थ्य, उत्तम शिक्षा, जनसंख्या नियंत्रण, लिंग समानता आदि पर जोर दिया जाता है।
- **आर्थिक आयाम**—सतत विकास के आर्थिक आयामों में स्थायी अर्थव्यवस्था, गरीबी की समाप्ति, रोजगार के अवसर (विशेष रूप से महिलाओं के लिए) प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, जिम्मेदार खपत एवं उत्पादन आदि पर जोर दिया जाता है।
- **पर्यावरणीय आयाम**—सतत विकास के लिए पर्यावरणीय आयामों में पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए स्वच्छ जल एवं स्वच्छता, पानी के नीचे का जीवन और जमीन पर जीवन के प्राकृतिक आवासों का संरक्षण, सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा, नवीनीकरणीय ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देना, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने की तत्काल कार्यवाही आदि को शामिल किया गया है।
- **संस्थागत आयाम**—इसमें उद्योग नवाचार और बुनियादी ढाँचा, सतत शहर और समुदाय, शांति और न्याय के लिए संस्थान, सतत विकास लक्ष्यों के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आदि शामिल हैं। सतत विकास के लिए उपयुक्त वर्णित क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने 2015 से 2030 के बीच वैश्विक विकास का मार्गदर्शन करने के लिए 17 लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इन लक्ष्यों में सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय क्षेत्रों को शामिल किया गया है। ये समस्त क्षेत्र एक-दूसरे पर निर्भर हैं एवं इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज, नागरिकों की साझेदारी आवश्यक है।

प्रश्न 4. सतत विकास के लिए सिद्धांत और विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—सतत विकास वह विकास है, जो निरंतर चलता रहता है। इसमें भावी पीढ़ियों के हितों को किसी भी तरह की क्षति नहीं पहुँचाने का भाव छिपा है। सतत विकास को समझने के लिए इसके सिद्धांतों को जानना आवश्यक है। सतत विकास के कुछ प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं—

1. **पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण**—सतत विकास का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना है। यह पारिस्थितिकी दृष्टिकोण को अपनाते हुए जलीय पारिस्थितिकी तंत्र सहित सभी पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण को तरजीह देता है।

2. **जैव विविधता का संरक्षण**—मानव का अस्तित्व जैव विविधता पर निर्भर है। जैव विविधता का अर्थ है, पृथ्वी पर जीवन की विशाल विविधता, जिसमें पौधे, बैक्टीरिया, जानवर और मनुष्य स्वयं भी शामिल है। जैव विविधता पर्यावरणीय संतुलन को कायम रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. **मानव संसाधन का संरक्षण**—सतत विकास के लिए मानव संसाधन का संरक्षण आवश्यक है। मानव संसाधन का विकास शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशिक्षण द्वारा किया जाता है।

4. **समाज का सतत विकास**—समाज के सतत विकास के लिए आवास, संतुलित आहार, स्वास्थ्य सेवाएँ, रोजगार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आदि की उपलब्धता आवश्यक है।

5. **जनसंख्या नियंत्रण**—सतत विकास के लिए जनसंख्या नियंत्रण एवं प्रबंधन आवश्यक है।

6. **नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना**—सतत विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में नागरिकों की भागीदारी आवश्यक है। नागरिकों की भागीदारी से ही सतत विकास प्रक्रिया पूर्ण अर्थ को प्राप्त करेगी। कोविड 19 के दौर में पर्यावरण संतुलन एवं सतत विकास की अवधारणा क्यों महत्त्वपूर्ण है, इसे हमने बेहतर तरीके से समझा है।

7. **अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और सहयोग को बढ़ावा**—सतत विकास के लिए लक्ष्यों के क्रियान्वयन के लिए अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सतत विकास की विशेषताएँ—सतत विकास के क्षेत्रों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आर्थिक विकास योजनाओं को बनाते समय निम्नलिखित सुविधाओं को लागू करने की आवश्यकताएँ हैं—

www.neerajbooks.com

(i) ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में कमी के लिए प्रयास,

(ii) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का इस्तेमाल,

(iii) जीवों के प्राकृतिक आवासों का सम्मान और सुरक्षा करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण,

(iv) पर्यावरण हितैषी कार्य जैसे हरित वास्तुकला आदि पर जोर देना तथा

(iv) नवीनीकरणीय स्रोतों के उत्पादन को पार करने से उपभोग की दर को नियंत्रित करना।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. सतत विकास क्या है? इसको प्राप्त करने की रणनीति क्या होनी चाहिए?

उत्तर–सतत विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है, जो निरंतर रूप से स्थिर रहे एवं विकास के फायदे वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को भी प्राप्त होते रहे।

सतत विकास के अंतर्गत आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है एवं अति उपभोक्तावादी तथा विलासितामूलक प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है।

धारणीय विकास को प्राप्त करने की रणनीति–

1. जनसंख्या का एक उपयुक्त आकार होना चाहिए एवं तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर पर नियंत्रण लगाने की आवश्यकता है।

2. गैर-नवीकरणीय संसाधनों का इस प्रकार से उपयोग करना कि उनके समाप्त होने से पहले उपयुक्त विकल्पों का विकास कर लिया जाए।

3. नवीनीकरणीय संसाधनों के प्रयोग को भी समुचित प्रबंधन की आवश्यकता है, ताकि उनके कम होने की दर उनके पुनर्निर्माण की दर से अधिक न हो।

4. स्वच्छ प्रौद्योगिकियों के विकास पर ध्यान देना और इस क्षेत्र में शोध एवं विकास पर निवेश बढ़ाना।

5. जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए स्वयं को तैयार करना।

6. जनसमुदायों में जागरूकता का प्रयास एवं जीवन शैली को पर्यावरण हितैषी बनाना।

प्रश्न 2. विश्व की बढ़ती जनसंख्या सतत विकास के लिए एक प्रमुख अवरोध है। समझाइए।

उत्तर–विश्व की आबादी में तेजी से वृद्धि हो रही है, इसके 2050 तक 9 अरब होने की संभावना है। वैश्विक स्तर पर सतत विकास की उपलब्धि जनसंख्या वृद्धि और प्रति व्यक्ति उपयोग के बढ़ते स्तर को ध्यान में रखते हुए विश्व समुदाय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सिद्ध होने की संभावना रखती है। बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की माँग भी बढ़ रही है। जिस भोजन का इस्तेमाल हो रहा है, उसके स्वरूप में भी अंतर आ रहा है। मध्यम वर्गीय परिवारों में फल, सब्जियाँ, पशु उत्पाद, मछली आदि का उपभोग बढ़ रहा है। कई देशों में कृषि विकास के लिए वनों की कटाई हो रही है, जिससे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

भारत जैसे बड़े जनसंख्या वाले देश में सूक्ष्म पोषक तत्वों-लौह, आयोडीन, विटामिन की कमी से पीड़ित लोगों की संख्या काफी है। इस करण मानव पूँजी का ठीक ढंग से उपयोग नहीं हो पा रहा है, क्योंकि उनकी ज्ञान शक्ति घट जाती है और श्रम की उत्पादकता भी कम हो जाती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि बढ़ती जनसंख्या की वजह से कृषि क्षेत्र, नदी, पानी, हवा, वन, प्राकृतिक संसाधन, सभी प्रभावित हो रहे हैं।

बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित कर सतत विकास में आने वाली कठिनाईयों को दूर किया जा सकता है। जनसंख्या में वृद्धि सतत विकास के लिए एक प्रमुख अवरोध अवश्य है, किंतु प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन, उपभोक्तावादी संस्कृति, विकास की गलत नीति आदि भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। सतत विकास के तीनों स्तंभ समाज, अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण के एकीकरण के माध्यम से हम एक बेहतर पक्ष का निर्माण कर सकते हैं। वर्तमान समय में सभी देश सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

प्रश्न 3. पर्यावरण संकट क्या है? पर्यावरण संकट के क्या कारण हैं?

उत्तर–पर्यावरणीय संकट उस स्थिति को संदर्भित करता है, जब कोई पर्यावरण जीवन निर्वाह के अपने महत्त्वपूर्ण कार्य को करने में विफल हो जाता है। निम्नलिखित के होते ही पर्यावरण उपयुक्त हो जाता है–

1. संसाधन निष्कर्षण संसाधन उत्पादन की दर से नीचे रहता है।

2. अपशिष्ट का उत्पादन पर्यावरण की अवशोषण क्षमता के भीतर रहता है।

पर्यावरण संकट के कारण–इसके निम्नलिखित कारण हैं–

1. जनसंख्या विस्फोट–जनसंख्या वृद्धि की उच्च दर पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इससे पर्यावरणीय संसाधनों की मांग बढ़ जाती है, लेकिन उनकी आपूर्ति सीमित होती है। इसके परिणामस्वरूप संसाधनों का अति प्रयोग और दुरुपयोग होता है।

2. आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि–आर्थिक विकास में वृद्धि के परिणामस्वरूप वस्तुओं और सेवाओं की समृद्ध खपत और उत्पादन होता है। यह ऐसे अपशिष्ट उत्पन्न करता है, जो पर्यावरण की अवशोषण क्षमता से परे हैं।

3. तीव्र औद्योगीकरण–तेजी से औद्योगीकरण के कारण वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हुआ है। जल निकायों में विषाक्त पदार्थों और औद्योगिक कचरे की बढ़ती मात्रा के संचय के कारण पानी प्रदूषित होता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com